मुक्त चिन्तन

News Letter

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

मुक्त चिन्तन

18 जून, 2026

मुक्त विश्वविद्यालय में 12 साल बेमिसाल पर व्याख्यानमाला का आयोजन

मुक्त विश्वविद्यालय में 12 साल बेमिसाल पर व्याख्यान माला का आयोजन

केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संचालित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित सात दिवसीय व्याख्यानमाला के क्रम में दिनांक 18 जून, 2026 को "वैदिक संस्कृति एवं विकसित भारत @2027" विषय पर एक प्रेरणादायी व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों को जन–जन तक पहुँचाने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और जीवन मूल्यों के प्रति नई पीढ़ी को जागरूक करना था। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 श्री महंत महामंडलेश्वर, ब्रह्मर्षि डॉ0 स्वामी महेश योगी जी, श्री हनुमानगढ़ी पीठ, अयोध्या रहे तथा अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो0 सत्यकाम जी ने की।

प्रारंभ में कार्यक्रम का शुभारम्भ नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह द्वारा अतिथियों के वाचिक स्वागत एवं विषय–प्रस्तावना के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० सुनील कुमार एवं प्रोफेसर आनन्दानंद त्रिपाठी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

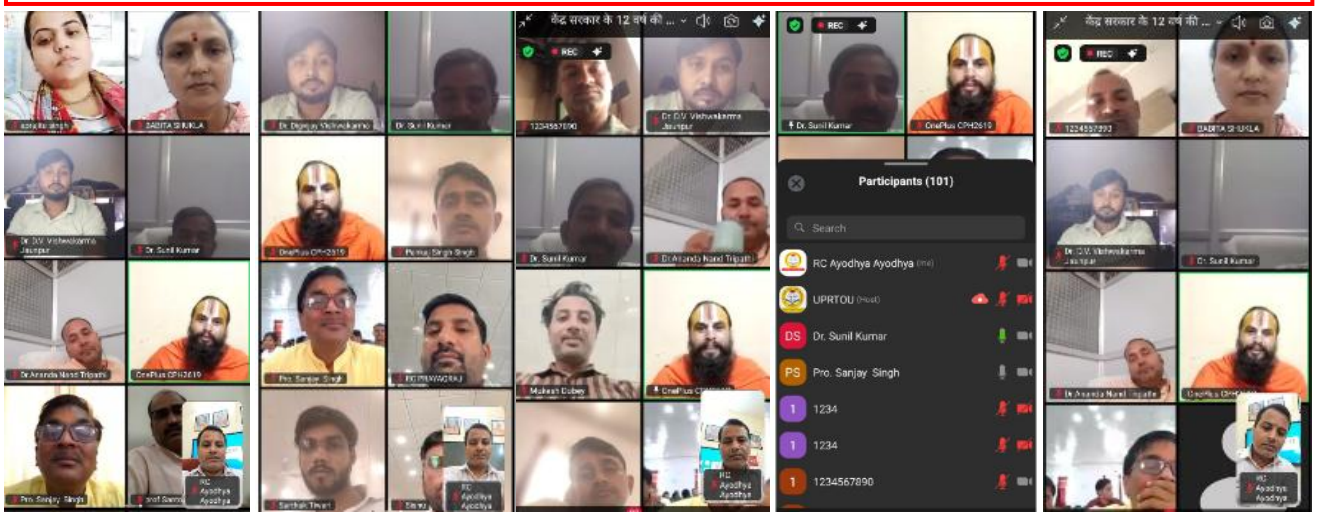

वेद, योग और संस्कारों के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु बन सकता है : महंत डॉ. स्वामी महेश योगी

अपने उद्‌बोधन में स्वामी महेश योगी जी ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संतों, ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है। योग, वैदिक ज्ञान और सनातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि है, जहाँ ज्ञान और अध्यात्म का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है।

उन्होंने भगवान श्रीराम के आदर्शों, श्रीकृष्ण के योग, हनुमान जी के ज्ञान, पराक्रम और गुरु–भक्ति का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके जीवन–मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि माता–पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा, ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय ही व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनाता है।

स्वामी जी ने युवाओं में ऊर्जा, पुरुषार्थ, अनुशासन एवं चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थों तथा भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का महत्व बताया। उन्होंने कौशल विकास को भारतीय परंपरा से जोड़ते हुए हिरण्यकश्यप, एकलव्य और अन्य महापुरुषों के उदाहरण प्रस्तुत किए तथा कहा कि ज्ञान और धर्म के संतुलन से ही राष्ट्र का कल्याण संभव है।

उन्होंने चेतना शक्ति, तपोवन की वैज्ञानिक परंपरा, टेलीपैथी, अष्टांग योग, सप्त चक्रों की साधना तथा मानव चेतना के विकास जैसे विषयों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मचेतना को परमचेतना से जोड़ने का माध्यम है, जिससे परम ज्ञान की प्राप्ति होती है।

स्वामी जी ने विद्यार्थियों को दो प्रमुख लक्ष्य निर्धारित करने की प्रेरणा दीकृपहला, शिक्षा के साथ कौशल विकास और दूसरा, शिक्षा के साथ साधना। उन्होंने कहा कि विनम्रता, आध्यात्मिक चेतना और सतत प्रयास से ही व्यक्ति जीवन के चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वामी विवेकानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरणा लेकर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में योगदान दें।

भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा है : –प्रोफेसर सत्यकाम

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत्यकाम जी ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है। उन्होंने कहा कि 'भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा है।' पिछले 12 वर्षों में देश की सांस्कृतिक गरिमा, विरासत और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर कार्य किया गया है।

कुलपति जी ने मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी का विश्वविद्यालय परिवार की ओर से विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करने वाले हैं।